2 अगस्त 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
# पथप्रदर्शक

ए-४, बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

**देहादि परपदार्थों से भिन्न निज भगवान आत्मा में अपनापन स्थापित होना एक अभूतपूर्व अद्भुत क्रान्ति है, धर्म का आरंभ है।**

ह्न सूक्ति सुधा, पृष्ठ-134

वर्ष : 30, अंक : 9 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (प्रथम), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

# पूरे देश में अष्टान्हिका महापर्व धूम-धाम से मनाया गया

1. **जयपुर (राज.) :** यहां श्री टोडरमल स्मारक भवन में आषाढ माह की अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर दिनांक 22 जुलाई से 30 जुलाई तक श्री टोडरमल महिला मण्डल की ओर से श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मौ एवं महाविद्यालय के छात्रों ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार अनुशीलन पर मार्मिक प्रवचन हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं विद्यार्थी प्रवचन के पश्चात् पण्डित प्रवीणजी शास्त्री के विधान की जयमाला पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

2. **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर चौबीसी, जौहरी बाजार में श्री नीरज जैन की भावनानुसार उनके पिताश्री विजयकुमारजी जैन परिवार द्वारा श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधान के समस्त कार्य डॉ. सनतकुमारजी जैन जयपुर ने सम्पन्न कराये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

3. **सोनागिरि (म.प्र) :** यहाँ तेरहपंथी कोठी स्थित श्री दिगम्बर जैन खण्डेलवाल मंदिर में पर्व के अवसर पर महावीर परमागम सेवा समिति लाला का बाजार के तत्त्वावधान में श्री सुरेशचंदजी योगेशकुमारजी के सहयोग से श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

समस्त कार्य पण्डित मधुकरजी जलगांव के निर्देशन में सम्पन्न हुये। इस अवसर पर पण्डित श्यामलालजी ग्वालियर एवं पण्डित अशोकजी ग्वालियर के प्रवचनों का लाभ मिला।

4. **अलवर (राज.) :** यहाँ नवनिर्मित जिनमंदिर, चेतन एन्क्लेव में पर्व के अवसर पर पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर के तीनों समय मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं समयसार पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

पण्डितजी की प्रेरणा से नवीन पाठशाला का उद्घाटन किया गया तथा साथ ही प्रौढ वर्ग के लिये सायंकालीन दैनिक शास्त्र सभा लगाने का समाज से वचन लिया।

प्रतिदिन प्रात: जिनेन्द्र पूजन एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति होती थी। समस्त कार्य पण्डित अजितजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुये।

पर्व के मध्य द्रोणगिरि पंचकल्याणक हेतु चलाये जा रहे सिद्धायतन रथ का अलवर जैन समाज ने उत्साह से स्वागत किया। **ह्न जिनेन्द्र जैन**

5. **अम्बाह (म.प्र.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर में परेठ में पर्व के अवसर पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन स्व. प्रीतमचंदजी की स्मृति में विजयकुमार, आनन्दकुमार, अनिलकुमार, आशीष एवं अक्षय जैन द्वारा कराया गया।

विधान के समस्त कार्य पण्डित लालजीरामजी विदिशा ने पण्डित राकेशजी ग्वालियर के सहयोग से सम्पन्न कराये। इस अवसर पर पण्डित पदमचंदजी सर्राफ आगरा, पण्डित पदमचंदजी ग्वालियर, पण्डित चंद्रकुमारजी शिवपुरी के प्रवचनों का लाभ मिला। स्थानीय विद्वान पण्डित बाबूलालजी सर्राफ एवं पण्डित कपूरचंदजी का सान्निध्य भी मिला।

प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये, जिनमें कवि सम्मेलन एवं माता-देवी की चर्चा मुख्य थे।

6. **सोलापुर (महा.) :** यहाँ श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कासार में श्री शांतिनाथ देवेन्द्र मुलगे व परिवार द्वारा श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

सायंकाल श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित विजय बोरालकर शास्त्री के प्रवचन एवं उन्हीं के निर्देशन में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। विधान के समस्त कार्य पण्डित प्रशांत मोहरे शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर आर्यिका द्वय 105 विज्ञाश्री माताजी एवं 105 विकक्षा माताजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

## ध्यान दें !

दशलक्षण महापर्व में प्रवचनकार विद्वान बुलाने हेतु जिन स्थानों से आमंत्रण अभी तक नहीं भेजे गये हैं, वे शीघ्र ही फैक्स (0141-2704127) द्वारा आमंत्रण भेजें।

सम्पादकीय - 1

## मुझे तो इन बातों की खबर ही नहीं

**नैतिकता और तत्त्वज्ञान की प्रेरक कहानी**

''कोई भी काम अपने आप में छोटा या बड़ा नहीं होता तथा उस काम के अनुसार विभाजित जातियाँ भी कोई नीच-ऊँच नहीं होती।

देखो न ! आज अरबों-खरबों रुपयों की लागत से व्यवसाय-उद्योग करने वाली रिलायंस जैसी बड़ी-बड़ी कंपनियाँ भी साक-भाजी बेच ही रही हैं और नगरनिगम जैसी शासकीय संस्थायें भी नगर की सफाई का काम करतीं/करातीं ही हैं। अहिंसा प्रेमी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सभी छोटे-बड़े काम अपने हाथों से करके बड़प्पन का परिचय दिया ही था। इन छोटे-बड़े कामों का नीच-ऊँच से क्या वास्ता?

अरे ! नीच-ऊँचपना होता है अपने निकृष्ट एवं उत्कृष्ट आचरण से। हिंसा-झूँठ-चोरी-बलात्कार आदि अनैतिक पाप कार्य करना, शराब, चरस, गाँजा आदि नशीले पदार्थों का सेवन करना तथा जुआ आदि दुर्व्यसनों का सेवन करना निकृष्ट आचरण हैं तथा इनसे विपरीत ह्न अहिंसा-सत्य, संयम, सदाचार, दया-दान, परोपकार आदि उत्कृष्ट आचरण हैं। इन्हीं भले-बुरे आचरणों से नीच-ऊँच की पहचान होती है।

जो निकृष्ट आचरण करते हैं, उनमें स्वतः ही हीन भावना पनपने लगती हैं और धीरे-धीरे वे दूसरों की दृष्टि में भी नीची श्रेणी में गिने जाने लगते हैं। जिनका आचरण-उत्कृष्ट होता है, वे स्वयं की दृष्टि में एवं दूसरों की दृष्टि में भी ऊँची श्रेणी में आ जाते हैं।

दूसरों की निन्दा एवं अपनी प्रशंसा करने तथा दूसरों के सद्गुणों को छुपाने और अपने असद्गुणों को छिपाने से भी नीच गोत्र का बंध होता है, जिसके फल में जीवों को नीच संज्ञा मिलती है।''[१]

ऐसे विचार हैं बुद्धिसेन के। अतः उसे ऊँची श्रेणी का सन्मान मिलना और गाँव के मुखिया की मान्यता मिलना स्वाभाविक ही है।

बुद्धिसेन के उपर्युक्त विचारों से अवगत कराते हुए उसके पिता चतरसेन ने गर्व से आगे कहा ह्न ''यद्यपि वह साक्षर ही है। ठीक से हिन्दी भी लिख-पढ़ नहीं सकता तो भी वह अपने कर्त्तव्यों के प्रति सदैव सजग रहने से और जन्मजात बुद्धि के पैनेपन के कारण कभी किसी के धोखे में नहीं आया और किसी को धोखा देना तो उसके स्वभाव में है ही नहीं।

लोग कहते हैं कि ह्न '**बुद्धिसेन उड़ती चिड़िया परख लेता है।**' अर्थात् वह चेहरा देखकर जान जाता है कि अमुक व्यक्ति कैसा है? और उससे कैसा व्यवहार करना चाहिए।''

ह्न ह्न ह्न

चतरसेन ने यह भी बताया कि ह्न ''बुद्धिसेन का बाल सखा वकील विद्याधर कानूनी विद्या का विशेषज्ञ है। वह कानूनी पेचीदगियों से भी सुपरिचित हो गया है। इस पेशे में आने वाले पहले से ही यह तो जानते ही हैं कि '**कानून अंधा होता है।**' इस कारण ह्न सच को झूठ और झूठ को सच साबित करना आज अधिकांश वकीलों के बाँयें हाथ का खेल हो गया है।

वकील विद्याधर का ऐसे ही वकीलों में सबसे ऊँचा नाम है। उसके बारे में तो हत्या जैसे जघन्य अपराध करने वाले अपराधियों के मुख से यहाँ तक कहते सुना जाता है कि ह्न 'जब तक विद्याधर वकील जिन्दाबाद है, तब तक कौन ऐसा माई का लाल है, जो हमें हवालात की हवा खिला सके।'

बात भी कुछ ऐसी ही है। विद्याधर वकील फौजदारी मामलों में सच को झूँठ, झूँठ को सच साबित करने में माहिर है। उसके पास कुछ ऐसे पेशेवर गवाह भी पलते-पुसते हैं, जिनसे वह जो कहलवाना चाहे, कहलवा कर अपराधियों को भी निरपराधी सिद्ध करके छुड़ा लेता है। इसके बदले में वह उनसे मनमानी फीस वसूल करता है।

इसतरह उसने पैसा तो खूब कमा लिया, परन्तु पैसे से उपलब्ध सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं के होते हुए भी उसे आत्म शान्ति नहीं है।'' विद्याधर की यह स्थिति देखकर बुद्धिसेन को विचार आया कि ह्न ''कैसे हैं ये न्यायाधीश? और कैसे हैं ये कानून के रक्षक वकील? जिनके होते हुए भी दिनों-दिन अपराध बढ़ ही रहे हैं? इनसे अच्छे तो हम जैसे अनपढ़ सरपंच ही अच्छे हैं जो न्याय करने में दूध का दूध और पानी का पानी करके जनता की सच्ची सेवा करते हैं।''

ह्न ह्न ह्न

चतरसेन ने बुद्धिसेन को बताया ह्न ''राजाओं के जमाने में तो राजा ही स्वयं न्यायाधीश हुआ करते थे। तब वकीलों एवं कानून की बड़ी-बड़ी किताबों का कोई काम ही नहीं था फिर भी सब ठीक-ठाक चलता था।

'ये वकील और ये न्यायालय (कोर्ट-कचहरियाँ) कब से/कैसे/क्यों आ गये?' ह्न इन प्रश्नों का उत्तर कठिन नहीं है, क्योंकि इनका इतिहास बहुत पुराना नहीं है। जब विदेशियों द्वारा राज्य सत्ता हथिया लेने पर न्याय करने वालों एवं न्याय पाने वालों के बीच भाषाओं की दूरियाँ बढ़ीं, तब वादी-प्रतिवादियों की बातें न्यायाधीशों को समझाने तथा न्यायाधीश की बातें वादी-प्रतिवादियों को समझाने के लिए जो दुभाषिया बिचौलिया बने, उन्हें ही वकील कहा गया।

वे वकील प्रारंभ में तो केवल दु-भाषियों का ही काम करते थे तथा शासन-प्रशासन के द्वारा निर्धारित न्याय के नियमों की रक्षा करते हुए वादी-प्रतिवादियों को न्याय दिलाने का पवित्र काम करते थे और उसके बदले में आजीविका के लिए वादी-प्रतिवादियों से उचित पारिश्रमिक लेते थे।

धीरे-धीरे कानूनों की पेचीदगियाँ बढ़ती गईं और अधिकांश वकील अधिक धन के लालच में पड़कर कानून को तोड़-मरोड़कर उनकी

१. मोक्षशास्त्र अध्याय-६, सूत्र-२५

व्याख्यायें बदल–बदल कर कानून की रक्षा के बजाय अपराधियों की रक्षा करने लगे और उसके बदले में मनमाना धन वसूल करने लगे।

इसतरह कालान्तर में वह शुद्ध–सात्विक वकालात का पेशा भी न्याय–नीति को ताक में रखकर काली कमाई का व्यवसाय बन गया।''

ह्न ह्न ह्न

वकील विद्याधर बुद्धिसेन के गाँव का ही मूल निवासी है। वकालात पढ़ने के लिए वह नजदीक के नगर में आया था, पढ़ने के बाद वहीं वकालात करने लगा तथा बुद्धिसेन अभी भी गाँव में ही रहता है। दोनों एक–दूसरे के व्यक्तित्व और कर्तृत्व से तो भली–भाँति परिचित हैं ही, विद्याधर बुद्धिसेन के यश से भी सुपरिचित है, इसकारण विद्याधर को सदैव यह बात कचौटती रहती थी कि 'जहाँ एक ओर इसी जिले के छोटे से गाँव में रहने वाला अनपढ़ किसान का बेटा बुद्धिसेन जो मात्र साक्षर होने पर भी थोड़ी–सी खेती और साधारण–सी साहूकारी करके गाँव का मुखिया और ग्रामसभा के चुनाव जीतकर ग्राम पंचायत का यशस्वी सरपंच भी बन गया है, वहीं दूसरी ओर पढ़ा–लिखा होकर भी मैंने अधिक धनार्जन के लालच में इस काम में पाप की कमाई करने के सिवाय और पाया ही क्या है? धर्म–कर्म तो कुछ किया ही नहीं, समाज की दृष्टि में भी नगण्य ही रहा हूँ।

इसके लिए तो मुझे बुद्धिसेन को ही अपना गुरु बनाना पड़ेगा। मैं उससे पूछूँगा कि तुमने अनपढ़ होकर भी यह सब ज्ञान एवं मान–सम्मान कैसे प्राप्त किया?'

एक दिन वकील विद्याधर ने उस बुद्धिसेन से आश्चर्यचकित होकर पूछा ह्न ''अरे भाई! तुम्हें तो काला अक्षर भैंस बराबर है, तुम तो हिन्दी भी ठीक से नहीं लिख–पढ़ सकते; फिर भी तुम कृषिपण्डित हो गये हो; तुम गाँव के मुखिया भी हो और ग्राम पंचायत के सरपंच भी! यह सब क्या चक्कर है? कुछ समझ में नहीं आया।''

बुद्धिसेन ने मुस्कुराते हुए सरल भाव से कहा ह्न ''अरे भाई ! इसमें मेरा क्या है? गाँव वालों ने मुझ पर विश्वास करके जनमत से जो जिम्मेदारी मुझे सौंपी है, मैं तो उसे ही निभा रहा हूँ।''

वकील विद्याधर ने व्यंग्य में कहा ह्न ''ये तो सब ठीक है; परन्तु पेट की बात बताओ। अनपढ़ होकर भी तुमने कैसे हथिया लिया यह कृषिपण्डित जैसे सम्मान का पद? तथा किसने बना दिया तुम्हें मुखिया? और ग्रामसभा का चुनाव जीतकर कैसे बन गये सरपंच? तुम कोई कानूनी दावपेंच भी तो नहीं जानते और राजनीति के खेल में भी तुम निपुण नहीं दिखते।''

ह्न ह्न ह्न

सच को झूँठ और झूँठ को सच्चा सिद्ध करने वाले वकील लोग तथा दाव–पेंचों के द्वारा राजनीति का खेल खेलने वाले राजनेता इससे अधिक और सोच भी क्या सकते हैं ? अतः वकील का आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक ही था। वे यह तो सोच भी नहीं सकते कि 'ये पद न चाहने पर भी, बिना दाव–पेंच के एवं बिना सिफारिश के भी अपनी निःस्वार्थ सेवा भावना और कर्तव्य निष्ठा से सहज प्राप्त हो सकते हैं।''

बुद्धिसेन ने सहज भाव से कहा ह्न ''विद्याधरजी! आप कैसे वकील हो? क्या आपको यही मालूम नहीं कि 'कृषिपण्डित' का सम्मान पढ़ाई से नहीं और सिफारिशों से भी नहीं; बल्कि कम खेती में अधिक फसल पैदा करने से सहज ही मिलता है और गाँव का मुखिया एवं ग्राम पंचायत का सरपंच भी मैं गाँववालों का हरसंभव सहयोग करने और न्याय दिलाने में सफलता के कारण हूँ। इन सबके लिए मुझे आप जैसे कागजी प्रमाणपत्रों की जरूरत नहीं पड़ी। इसके लिए तो जनहित में काम करने की जरूरत होती है। **जनहित की भावना से जनमत स्वतः अपने पक्ष में हो जाता है।** मैं तो जनता की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझकर करता हूँ, बस, इसीकारण जनता का प्रेम मुझे मिलता है। जनमत अपने पक्ष में करने के लिए मुझे कभी किसी के पास जाना नहीं पड़ा।''

वकील विद्याधर कृषि पण्डित बुद्धिसेन की कर्तव्यनिष्ठा, सरलता और ईमानदारी से तो प्रभावित हुआ ही, उसके सोचने के तरीके से भी प्रभावित हुआ। अतः उसने आश्चर्य मिश्रित हर्ष व्यक्त करते हुए कहा ह्न ''तुम्हारा कहना बिल्कुल सही है। अभी भी दुनियाँ में अच्छे और ईमानदार लोगों के कद्रदान हैं; परन्तु अनपढ़ होकर भी तुम यह सब कैसे कर पाते हो? मुझे तो लगता है कि तुम में कोई दैवी शक्ति है या तुमने मंत्र–तंत्र द्वारा कोई ऐसी चमत्कारिक अन्तरंग योग्यता प्राप्त कर ली है, जिससे आप यह सब कर लेते हो?''

बुद्धिसेन ने कहा ह्न ''अरे भाई! ऐसी कोई बात नहीं है। मैं स्वयं भी मंत्र–तंत्र और चमत्कारों से लौकिक सिद्धियाँ साधने में विश्वास नहीं करता। बस, मुझे अपने सत् कर्म, पुरुषार्थ और भाग्य पर भरोसा है। अतः मैं धनार्जन के लिए भी कोई अनैतिक साधन नहीं अपनाता। मैं तो बस कृषि करता हूँ और ऋषि जैसा पवित्र जीवन जीता हूँ। गरीब जनता का सहयोग करने की भावना से बैंक की ब्याज दर पर ही थोड़ी–सी साहूकारी भी कर लेता हूँ, इससे अनपढ़ किसानों को बैंकों के चक्कर नहीं काटने पड़ते और बैंकों के बाबुओं की खुशामद नहीं करनी पड़तीं।

रही बात लिखा–पढ़ी की सो आज के युग में पढ़े–लिखों की क्या कमी है? रोजगार कार्यालयों में बे–रोजगार डिग्री धारियों की रोजाना लंबी लाईन लगी रहती है। उन्हीं में से कोई ऐसे ईमानदार, मेहनती मनुष्य मिल जाते हैं जो लिखा–पढ़ी तो सही कर लेते हैं, पर वे किसी नये काम का निर्णय नहीं ले पाते। जबकि **सही निर्णय ही सफलता का मूल मंत्र** है, सौभाग्य से उस लायक बुद्धिबल मुझे सहज प्राप्त है। मैं जो भी निर्णय लेता हूँ, वह मुझे सफलता के शिखर तक पहुँचा देता है। बस, यही मेरी सफलता का राज है।'' **(ह्न अगली किस्त में समाप्य)**

## वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

**कालाखेत (मन्दसौर–म.प्र.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल मंदसौर के तत्त्वावधान में दिनांक 30 जून से 2 जुलाई तक वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दो नवीन वेदियों में भगवान आदिनाथ व भगवान महावीरस्वामी की सुन्दर प्रतिमाएँ विराजमान की गईं।

इस प्रसंग पर आयोजित यागमण्डल विधान एवं रथयात्रा आदि के सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल एवं पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये । कार्यक्रम में श्री राकेशजी जैन जयपुर का सराहनीय सहयोग रहा।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर को विद्यार्थी सहायता हेतु 5000/– रुपये की दान राशि प्राप्त हुई। **ह्न रखबचन्द मोदी**

## अंतर्राष्ट्रिय अहिंसा दिवस घोषित

दिनांक 16 जून, 07 के दिन संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा ने महात्मा गांधी के जन्म दिवस **2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रिय अहिंसा दिवस** के रूप में घोषित किया। इस निर्णय को अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन, छिन्दवाड़ा के सचिव दीपकराज जैन ने सम्पूर्ण विश्व में शान्ति और भाईचारे के समर्थक अहिंसा के पुजारियों की जीत बताई।

भारत की और से विदेश राज्य मंत्री आनन्द शर्मा ने 191 सदस्यों वाली संयुक्त राष्ट्र साधारण सभा में 2 अक्टूबर को '**अंतर्राष्ट्रिय अहिंसा दिवस**' घोषित करने का प्रस्ताव रखा था और कहा था कि अहिंसा का संदेश इतना व्यापक है कि उसमें किसी के भी प्रति हिंसा का भाव रखने की मनाही है। साथ ही राष्ट्रपिता के कथन का हवाला देते हुए यह भी कहा कि अहिंसा कायरता नहीं है और न ही कमजोरी है । भारत के इस प्रस्ताव के पक्ष में 137 सदस्य थे, जो अपने आप में गौरव की बात है। खास बात तो यह थी कि इस निर्णय के लिए किसी प्रकार के मतदान की आवश्यकता नहीं पड़ी। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस घोषणा का स्वागत करते हुये इसे गांधीजी और भारत के लिये उनके आन्दोलन की एक शानदार श्रद्धांजली बताया। **ह्न दीपकराज जैन**

## हार्दिक बधाई !

**जयपुर (राज.) :** श्री जैन विद्या संस्थान महावीरजी द्वारा आयोजित पत्राचार जैन धर्म दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट परीक्षा–2006 में **श्रीमती ज्योति सेठी** ध.प. श्री संजयजी शास्त्री, जयपुर ने 87 प्रतिशत अंक प्राप्त कर मैरिट में प्रथम स्थान (गोल्ड मैडल) प्राप्त किया; एतदर्थ आपको हार्दिक बधाई ! जैनपथप्रदर्शक परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

## छात्रावास शिलान्यास समारोह

**कोटा (राज.) :** यहां श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन 'मुमुक्षु आश्रम' ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 12 जुलाई,07 को श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन छात्रावास भवन का शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ।

छात्रावास भवन निर्माण का उद्देश्य लौकिक शिक्षण के साथ–साथ पारलौकिक शिक्षण व जैनदर्शन के अनुरूप छात्रों को सुविधाएँ उपलब्ध कराना है।

इस अवसर पर आयोजित समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में कोटा महानगर की विभिन्न संस्थाओं से राजेन्द्रकुमारजी बज, माणकचन्दजी कासलीवाल, अविनाशजी जैन, कमलजी बोहरा, सुरेन्द्रजी जैन, तेजमलजी पटवारी एवं प्रेमचन्दजी बजाज आदि पदाधिकारी मौजूद थे। सभी ने इस कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुये इस कार्य के शीघ्र ही पूर्ण होने की कामना की।

शिलान्यास सम्बन्धी समस्त कार्य पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर ने सम्पन्न कराये। **ह्न रतन चौधरी**

## अशोक बड़जात्या 'समाज रत्न' से विभूषित

श्रवणबेलगोला/दिगम्बर जैन महासमिति के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक समारोह–06 समिति के संरक्षक, वरिष्ठ समाजसेवी उद्योगपति श्री अशोक बड़जात्या इन्दौर को आचार्य श्री वर्द्धमानसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में श्रवणबेलगोला स्थित चामुण्डराय मण्डप में कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारकजी ने प्रदत्त उल्लेखनीय सेवाओं के लिये समाज रत्न की उपाधि से विभूषित किया।

इस अवसर पर उन्हें अभिनन्दन पत्र, शॉल, श्री फल व रत्न जडित रजत कलश स्मृति स्वरूप भेंट किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन भारत वर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी कर्नाटक के प्रांतीय अध्यक्ष श्री डी.आर. शाह (इण्डी) ने किया।

समारोह में श्री हंसमुख गांधी सहित अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। **ह्न राजेन्द्र जैन**

## छपते-छपते

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के परम्परानुसार इस वर्ष नवीन आगन्तुक छात्रों का परिचय सम्मेलन दिनांक 2 जुलाई को श्री दिग. जैन अतिशय क्षेत्र बैनाड (जयपुर) में सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। आपके अतिरिक्त क्षेत्र के पदाधिकारियों में श्रीमान छीतरमलजी एवं श्री गुलाबचन्दजी पाण्ड्या ने क्षेत्र का परिचय देते हुये अपने विचार व्यक्त किये।

ज्ञातव्य है कि कार्यक्रम में ब्र.यशपालजी जैन, श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त किये।

## उज्ज्वल भविष्य की कामना

**उदयपुर (राज.) :** श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री जिनेन्द्र शास्त्री भारतीय जनता युवा मोर्चा (श्यामा प्रसाद मुखर्जी मण्डल) के अध्यक्ष पद पर पुन: मनोनीत हुये। श्री शास्त्री पूर्व में श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय जयपुर के छात्रसंघ अध्यक्ष, राजकीय महाराजा आचार्य संस्कृत महाविद्यालय उदयपुर के छात्रसंघ अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आप वर्तमान में रोड़वेज व्यापार संघ के अध्यक्ष एवं लखारा चौक व्यापार संघ के अध्यक्ष, कुन्दकुन्द वीतराग–विज्ञान शिक्षण समिति के प्रचार मंत्री एवं अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन के प्रदेश प्रतिनिधी हैं।

जैनपथप्रदर्शक समिति एवं महाविद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

## धर्म प्रभावना

**छिन्दवाड़ा (म.प्र.) :** यहाँ गोलगंज स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जिन मंदिर में दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के सदस्यों द्वारा श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 19 जून को ब्र. संवेगी धवलजी के निर्देशन में 'धम्म देशना ईर्यापथ मंगलविहार' निकाला गया, जिसमें रजत पालकी में ग्रन्थराज षट्खण्डागम को विराजमान करने का सौभाग्य श्री रतनचंदजी प्रमोदकुमार पाटनी परिवार को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर दोपहर में श्रीमती कुसुमलताजी पाटनी के मार्गदर्शन में महिला मण्डल द्वारा जिनशासन के ग्रन्थों एवं शब्द कोशों पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त ब्र. धवलजी के मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये। सम्पूर्ण आयोजन से समाज में महती धर्म प्रभावना हुई। **ह्न दीपकराज जैन**

## बी. उमापति जैन को पीएच.डी.

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक **बी.उमापति जैन** को उनके शोध प्रबन्ध '**जैन वांगमय में अनुयोगों का विश्लेषणात्मक अध्ययन**' विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गयी। आपने यह कार्य दि. जैन संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शीतलचन्द्रजी जैन के निर्देशन में पूर्ण किया है।

ज्ञातव्य है कि आप वर्तमान में केन्द्रीय विद्यालय, चेन्नई (तमिलनाडु) में वरिष्ठ अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं।

उक्त उपलब्धि हेतु आपको जैनपथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

## बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

1. **जयपुर (राज.) :** यहाँ मालवीय नगर से.7 स्थित श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर मे 8 वें बाल संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 7 से 19 जून तक श्री नथमलजी झांझरी परिवार द्वारा किया गया।

शिविर में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर एवं श्रीमती ज्योतिजी सेठी जयपुर की कक्षाओं के अतिरिक्त पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर तथा पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ़ के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 18 जून को सभी विद्यार्थियों की परीक्षा लेकर दिनांक 19 जून को आयोजित समापन समारोह में उत्तीर्ण समस्त परीक्षार्थियों को पुरस्कार वितरित किये गये।

2. **अशोकनगर (म.प्र.) :** यहाँ श्री मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में अखिल भा.जैन युवा/महिला फैडरेशन द्वारा चतुर्थ बाल एवं संस्कार शिविर का आयोजन पण्डित श्री बाबूभाई मेहता फतेपुर के निर्देशन में दिनांक 24 से 29 जून,07 तक किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री छोगालालजी रमेशचंदजी राजपुर के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा के मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित विवेकजी पिड़ावा, पण्डित सुमितजी जैन, पण्डित वैभवजी जैन, पण्डित अर्पितजी सिंघई व पण्डित आकाशजी बसन्त की कक्षाओं का लाभ भी मिला।

3. **ग्वालियर (म.प्र.) :** यहाँ श्री जैन नैतिक शिक्षा समिति द्वारा श्री दिग. जैन स्वर्ण मन्दिर में दिनांक 22 से 30 मई, 07 तक 13 वाँ बाल शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

शिविर में पण्डित धनेन्द्रजी सिंघल ग्वालियर, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित अनुभवजी फिरोजाबाद, पण्डित प्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अंकितजी जैन एवं पण्डित अंकुरजी जैन मंगलायतन ने विभिन्न कक्षाओं का संचालन किया। सम्पूर्ण शिविर का संयोजन अनिलजी, रोहितजी एवं दीपेशजी ने किया। **ह्न राकेश नायक**

4. **बदरवास (शिवपुरी–म.प्र.) :** यहाँ दिनांक 6 से 15 जून तक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय विद्वान पण्डित अभयकुमारजी जैन, पण्डित राहुलजी शास्त्री एवं कु. प्रेरणाजी के सहयोग से अध्यापन कार्य व अनेक कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये।

## चल शिक्षण-शिविर सम्पन्न

**चित्तौड़गढ़ (राज.) :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय कुंभानगर में श्री कुन्दकुन्द वीतराग विज्ञान शिक्षण समिति उदयपुर द्वारा 12 से 18 जुलाई तक चल शिक्षण–शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित अश्विन नानावटी शास्त्री उदयपुर के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ समाज को मिला। शिविर का समापन 18 जुलाई को श्री राजेन्द्र पाटनी की अध्यक्षता में हुआ।

तत्त्वचर्चा

## छहढाला का सार 12

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

**(गतांक से आगे)**

निश्चय और व्यवहार सम्यग्दर्शन के निरूपण करने के उपरान्त सम्यग्दर्शन से सम्पन्न ज्ञानी का गुणगान करते हुये पण्डित दौलतरामजी कहते हैं ह्न

**दोष-रहित गुण-सहित सुधी जे, सम्यग्दर्श सजै हैं।**
**चरितमोहवश लेश न संजम, पै सुरनाथ जजै हैं।।**
**गेही पै गृह में न रचे ज्यों, जल तैं भिन्न कमल हैं।**
**नगर-नारि को प्यार यथा, कादे में हेम अमल हैं।।**

जो सुधीजन पच्चीस दोषों से रहित और आठ गुणों (अंगों) से सहित सम्यग्दर्शन से सज्जित हैं; यद्यपि चारित्रमोह के वश होने से उनके रंचमात्र भी संयम नहीं है; तथापि देवेन्द्र उनकी स्तुति-वंदना करते हैं, गुणगान करते हैं।

जिसप्रकार जल के बीच रहता हुआ कमल जल से भिन्न ही रहता है; उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि जीव यद्यपि गृहस्थ हैं, घर में रहते हैं; पत्नी-परिवार के बीच रहते हैं; तथापि घर में रचते-पचते नहीं हैं। उनका प्यार तो नगर-नारी (वेश्या) के समान दिखावटी ही है; वे तो घर में उसीप्रकार निर्मल रहते हैं कि जिसप्रकार कीचड़ पड़ा हुआ सोना निर्मल रहता है।

ध्यान रहे यहाँ सम्यग्दृष्टि के स्नेह की तुलना वेश्या से मात्र निर्लिप्तता की अपेक्षा ही की गई है।

इसप्रकार इस ढाल को तो उन्होंने सम्यग्दर्शन तक ही सीमित रखा और अन्त में घोषणापूर्वक कहा कि देखो भाई ! यदि तुमने यह सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया तो समझ लो कि ह्न

**प्रथम नरक विन षट् भू ज्योतिष वान भवन षंड नारी।**
**थावर विकलत्रय पशु में नहिं, उपजत सम्यक् धारी।।**
**तीनलोक तिहुँकाल माहिं नहिं, दर्शन सो सुखकारी।**
**सकल धर्म को मूल यही, इस बिन करनी दुखकारी।।**

सम्यग्दृष्टि जीव पहले नरक को छोड़कर छह नरकों में नहीं जाता है। भवनवासी, व्यंतर और ज्योतिषी नहीं होता। नपुंसक व स्त्री पर्याय में नहीं जाता। स्थावर और विकलत्रय अर्थात् दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय और चार इन्द्रिय नहीं होता और तिर्यंच गति में भी उत्पन्न नहीं होता।

तीन लोक में और तीन कालों में सम्यग्दर्शन के समान सुखकारी अन्य कोई पदार्थ नहीं है। यह सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र, तप आदि सभी धर्मों का मूल है। तात्पर्य यह है कि सम्यग्दर्शन के बिना ये धर्म हो ही नहीं सकते। अधिक क्या कहें, इस सम्यग्दर्शन के बिना जो भी क्रिया की जायेगी, वह दु:खकारी ही सिद्ध होगी।

**प्रश्न :** एक ओर यह लिखा है सम्यग्दृष्टि प्रथम नरक को छोड़कर शेष छह नरकों में नहीं जाते। इसका अर्थ यह हुआ कि वे पहले नरक में जाते हैं, जा सकते हैं, राजा श्रेणिक सम्यग्दृष्टि होते हुये भी नरक गये भी हैं; वही दूसरी ओर यह लिखा कि वे नपुंसक नहीं होते, जबकि नारकी नियम से नपुंसक ही होते हैं।

क्या यह विरोधाभास नहीं है ?

**उत्तर :** बात यह है कि सम्यग्दर्शन की उपस्थिति में नरकायु का बंध नहीं होता; अत: वे नरक में नहीं जाते ह्न ऐसा कहना भी गलत नहीं है। आचार्य समन्तभद्र ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में ऐसा ही लिखा है ह्न

**सम्यग्दर्शनशुद्धा: नारकतिर्यङ्नपुंसकस्त्रीत्वानि।**
**दुष्कुलविकृताल्पायु: दरिद्रतां च व्रजन्ति नाप्यव्रतिका:।।**[1]

जो प्राणी सम्यग्दर्शन से शुद्ध हैं; वे प्राणी अव्रती होने पर भी नारकी, तिर्यंच, नपुंसक और स्त्रीपने को प्राप्त नहीं होते; उनका जन्म नीचकुल में नहीं होता, वे विकृत अंगवाले नहीं होते, अल्पायु नहीं होते और दरिद्री भी नहीं होते। तात्पर्य यह है कि सम्यग्दर्शन होने के बाद उक्त अवस्थायें प्राप्त हों ह्न ऐसा पापबंध नहीं होता।

वस्तुत: बात यह है कि यदि सम्यग्दर्शन होने से पहले नरकायु-नरकगति बंध जावे तो बाद में सम्यग्दर्शन हो जाने पर भी गतिबंध नहीं छूटता; हाँ आयुकर्म की स्थिति का अपकर्षण हो सकता है।

यही कारण है कि राजा श्रेणिक को नरकायु की ३३ सागर की स्थिति बंधी, जो घटकर ८४ हजार वर्ष ही रह गयी। ८४ हजार वर्ष की स्थिति प्रथम नरक में ही होती है। इसलिए राजा श्रेणिक प्रथम नरक में ही गये। जब नरक गये तो नपुंसक भी हुये ही हैं; क्योंकि नरकायु के साथ नपुंसक वेद भी बंध जाता है।

आचार्य कुन्दकुन्द अष्टपाहुड़ के दर्शनपाहुड़ और मोक्षपाहुड़ सम्बन्धी प्रकरण में सम्यग्दर्शन की महिमा समझाते हुये लिखते हैंह्न

**दंसणभट्ठा भट्ठा दंसणभट्ठस्स णत्थि णिव्वाणं।**
**सिज्झंति चरियभट्ठा दंसणभट्ठा ण सिज्झंति।।**[2]
**समत्तविरहिया णं सुट्ठु वि उग्गं तवं चरंता णं।**
**ण लहंति बोहिलाहं अवि वाससहस्सकोडीहिं।।**[3]

---

१. रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक : ३५
२. अष्टपाहुड़ : दर्शनपाहुड़, गाथा ३
३. अष्टपाहुड़ : दर्शनपाहुड़, गाथा ५

**किं बहुणा भणिएणं जे सिद्धा णरवरा गए काले।**
**सिज्झिहहि जे वि भविया तं जाणह सम्ममाहप्पं।।**[१]

( हरिगीत )

**दृग–भ्रष्ट हैं वे भ्रष्ट हैं उनको कभी निर्वाण ना।**
**हों सिद्ध चारित्र–भ्रष्ट पर दृग–भ्रष्ट को निर्वाण ना।।**
**यद्यपि करें वे उग्र तप शत–सहस–कोटी वर्ष तक।**
**पर रतनत्रय पावें नहीं सम्यक्त्व–विरहित साधु सब।।**
**मुक्ती गये या जायेंगे माहात्म्य है सम्यक्त्व का।**
**यह जान लो हे भव्यजन ! इससे अधिक अब कहें क्या।।**

जो पुरुष सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट हैं, वे भ्रष्ट हैं; उनको कभी निर्वाण की प्राप्ति नहीं होती; क्योंकि यह प्रसिद्ध है कि जो चारित्र से भ्रष्ट हैं, वे तो सिद्धि को प्राप्त होते हैं; परन्तु जो सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट हैं, वे सिद्धि को प्राप्त नहीं होते। तात्पर्य यह है कि चारित्र की अपेक्षा श्रद्धा का दोष बड़ा माना गया है।

सम्यग्दर्शन रहित मुनि हजार करोड़ (दश अरब) वर्ष तक भली भाँति उग्र तप करें, तो भी उन्हें बोधि (रत्नत्रय) की प्राप्ति नहीं होती ।

अधिक कहने से क्या लाभ है, इतना समझ लो कि आज तक जो जीव सिद्ध हुये हैं और भविष्यकाल में होंगे, वह सब सम्यग्दर्शन का ही माहात्म्य है। तात्पर्य यह है कि सम्यग्दर्शन के बिना न तो आज तक कोई सिद्ध हुआ है और न भविष्य में होगा।

इसप्रकार हम देखते हैं कि जैनदर्शन में सम्यग्दर्शन को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उसे सभी धर्मों का मूल कहा गया है।

इसके बाद अंतिम चेतावनी देते हुये कविवर पण्डित दौलतरामजी लिखते हैं ह्न

**मोक्षमहल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान चरित्रा।**
**सम्यक्ता न लहै सो दर्शन, धारो भव्य पवित्रा।।**
**'दौल' समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै।**
**यह नरभव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक् नहिं होवै।।**

यह सम्यग्दर्शन मोक्षमहल की पहली सीढ़ी है। इस सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान और चारित्र सम्यक्पने को प्राप्त नहीं होते। इसलिए हे भव्यजीवों ! जैसे भी बने इस सम्यग्दर्शन को अवश्य धारण करो।

दौलतरामजी कहते हैं कि यदि तुम सयाने (समझदार) हो तो सुनो, समझो और चेतो, व्यर्थ में समय खराब मत करो; क्योंकि यदि इस भव में सम्यग्दर्शन नहीं हुआ तो दुबारा यह मनुष्यभव मिलना अत्यन्त कठिन है।

इसप्रकार सम्यग्दर्शन का स्वरूप और महिमा का निरूपण करनेवाली तीसरी ढाल समाप्त होती है। ●

१. अष्टपाहुड़ : मोक्षपाहुड़, गाथा ८८

## चौथा प्रवचन

पहली ढाल में यह बताया था कि चारों गतियों में दु:ख ही दु:ख हैं, संसार में सुख कहीं भी नहीं है। दूसरी ढाल में उक्त दु:खों के कारणरूप मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र की चर्चा की। तीसरी ढाल में उन दु:खों से मुक्त होने के उपायरूप निश्चय–व्यवहार सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की सामान्य चर्चा करके सम्यग्दर्शन के स्वरूप और महिमा पर विशेष प्रकाश डाला।

अब इस चौथी ढाल में सम्यग्ज्ञान का स्वरूप समझाकर, महिमा बताकर, देशचारित्र का निरूपण करेंगे।

चौथी ढाल के प्रारंभिक दोहे में ही कहा है ह्न

**सम्यक् श्रद्धा धारि पुनि, सेवहु सम्यग्ज्ञान।**
**स्व–पर अर्थ बहु धर्मजुत, जो प्रगटावन भान।।**

सम्यक् श्रद्धा धारण करके सम्यग्ज्ञान का सेवन करो; क्योंकि सम्यग्ज्ञान अनन्तधर्मात्मक स्व–पर पदार्थों को प्रगट करने के लिये सूर्य के समान है। जैसे सूर्य के प्रकाश में सभी पदार्थ प्रकाशित होते हैं; वैसे ही सम्यग्ज्ञान में भी सभी स्व–पर पदार्थ प्रकाशित होते हैं।

यहाँ एक प्रश्न हो सकता है कि उक्त दोहे में तो यह कहा है कि सम्यग्दर्शन को प्रगट करने के उपरान्त सम्यग्ज्ञान का सेवन करना चाहिये; परन्तु अगले ही छन्द में यह कहा है कि सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान एक साथ ही प्रगट होते हैं।

इस प्रश्न के उत्तर में कहते हैं कि बात तो यही सही है कि ज्ञान और श्रद्धा में सम्यक्पना एक साथ ही आता है; किन्तु यहाँ सम्यग्दर्शन का वर्णन विगत ढाल में हो चुका है और सम्यग्ज्ञान का अब होगा ह्न इसी अर्थ में उक्त प्रयोग हो गया है।

यद्यपि सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान एक साथ प्रगट होते हैं; तथापि उनमें कारण–कार्यभाव माना गया है। इस बात को समझाते हुये अगले ही छन्द में कहते हैं ह्न

**सम्यक् साथै ज्ञान होय, पै भिन्न अराधौ।**
**लक्षण श्रद्धा जानि, दुहू में भेद अबाधौ।।**
**सम्यक् कारण जान, ज्ञान कारज है सोई।**
**युगपत् होते हूँ, प्रकाश दीपक तैं होई।।**

यद्यपि सम्यग्दर्शन के साथ ही सम्यग्ज्ञान की उत्पत्ति होती है; तथापि उनमें लक्षणभेद है। सम्यग्दर्शन का लक्षण श्रद्धान करना है और ज्ञान का लक्षण जानना है। इनमें कारण–कार्य सम्बन्ध भी कहा है। जिसप्रकार दीपक और प्रकाश एक साथ ही प्रगट होते हैं, फिर भी दीपक को कारण और प्रकाश को कार्य कहा जाता है; उसीप्रकार सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान एक साथ प्रगट होते हैं,फिर भी सम्यग्दर्शन को कारण और सम्यग्ज्ञान को कार्य कहा गया है। **(क्रमश:)**

२ अगस्त २००७, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

## वैराग्य समाचार

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महा. के स्नातक एवं वीतराग-विज्ञान (मराठी) के पूर्व प्रबन्ध सम्पादक पण्डित महावीरजी पाटील सांगली (महा.) के 22 वर्षीय युवा **सुपुत्र चि. सुनय पाटील** का दिनांक 5 जून को आकस्मिक देहावसान हो गया।

2. श्री टोडरमल दि. जैन सि.महाविद्यालय के स्नातक पण्डित सचिनजी पाटनी कन्नड़ के **पिता श्री जयचन्दजी पाटनी** का दिनांक 14 जून को आकस्मिक देहावसान हो गया। आप अच्छे स्वाध्यायी एवं आत्मार्थी थे।

3. जयपुर निवासी जैनदर्शन के मूर्धन्य विद्वान **पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन बिल्टीवाला** का दिनांक 19 जुलाई को 76 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। आपने अनेक जैन ग्रन्थों का अंग्रेजी भाषा में रूपान्तरण तथा अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया है। वर्तमान में आदिपुराण एवं धवला को अंग्रेजी में अनुवाद कर प्रकाशित करने की आपकी योजना थी। 1779 में राजकी सेवा से स्वैच्छिक निवृत्ति लेने के पश्चात् प्रतिदिन दोपहर एवं सायं प्रवचन करना आपकी दिनचर्या का अभिन्न अंग था। राजस्थान जैन सभा द्वारा महावीर जयन्ती के अवसर पर प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली स्मारिका का 20 वर्षों तक आपने सम्पादन किया। आपके सैंकडों आध्यात्मिक लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। आपके चिर वियोग से जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

**दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही चतुर्गति के दु:खों से छूटकर मुक्ति की प्राप्ति करें ह्न यही मंगल भावना है। ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

## आवश्यक सूचना

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, जयपुर की सम्पूर्ण कार्य प्रणाली कम्प्यूटराइज्ड की जा रही है। अत: शीतकालीन परीक्षा जनवरी 2007 के प्रमाण-पत्र सम्बन्धित सभी परीक्षा केन्द्रों को अगस्त माह के अंतिम सप्ताह तक भेजे जायेंगे। **ह्न प्रबन्धक, परीक्षा बोर्ड**


## स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

**डॉ. पीयूष त्रिवेदी** (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

**समय :** सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

**नोट-**एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।


आगामी कार्यक्रम ....

## शिक्षण-शिविर

**भिण्ड (म.प्र.) :** यहाँ श्री सीमन्धर जिनालय देवनगर में श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं जैन युवा फेडरेशन द्वारा बाल ब्र. रवीन्द्रकुमारजी की प्रेरणा से दिनांक 14 से 22 अगस्त तक आध्यात्मिक शिक्षण एवं पूजन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाना निश्चित हुआ है।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री इन्दौर के अतिरिक्त बाहर से पधारे हुए अन्य विद्वानों का लाभ भी प्राप्त होगा।

आप सभी को हमारा सादर आमंत्रण है। आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था है। कृपया पधारने की पूर्व सूचना देवें।

सुरेश जैन (व्यवस्थापक)
देवनगर कॉलोनी, इटावा रोड़, भिण्ड (म.प्र.)
फोन नं.07534-234123


# साधना चैनल पर
# डॉ. भारिल्ल के प्रवचन

**अब प्रात: 6.20 से 6.40 बजे तक**

**देखना एवं सुनना न भूलें। इसकी सूचना मन्दिरजी में देवें और मित्रों को भी बता दें।**


**प्रति,**


सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।



*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
**फोन :** (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
**फैक्स :** (०१४१) २७०४१२७